Sub- Philosophy B.A- III Paper - VI Dr. Saroj Rani
D.K. College, Dumraon

आधुनिकता एवं परम्परा

Tradition and Modernity

मानव जीवन में वंश परम्परा और सामाजिक परम्परा दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है। मानव समाज के इतिहास पर अगर हम विहंगम दृष्टि डाले तो यह बिल्कुल स्पष्ट हो जायेगा कि समाज गतिशील तथा प्रगतिशील रहा है। ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि जो परम्परायें प्रचलित है उनमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। समय और परिस्थिति के कारण तथा अनेक कारकों के कारण समाज में परिवर्तन होते रहते हैं। सामाजिक परम्परा में होने वाले परिवर्तन और नवीनता को आधुनिकता की संज्ञा दे सकते हैं किन्तु केवल परिवर्तन ही आधुनिकता नहीं है आधुनिकता की अवधारणा में अनेक तत्व सम्मिलित है। बावजूद इसके ~~इसके~~ परम्परा और आधुनिकता एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी परस्पर सम्बंधित है। अतीत की सामाजिक प्रथाएँ रीति-रिवाज चाल-चलन और व्यवहार यदि परम्परा के अन्तर्गत आते है, तो वर्तमान रीति-रिवाज प्रथाएँ और मूल्य आधुनिकता के अन्तर्गत आते है। समाज की गतिशीलता के कारण नहीं आधुनिकता कालान्तर में परम्परा का रूप ले लेती है। इस प्रकार परम्परा और आधुनिकता में पारस्परिक संबंध है और दोनों में अन्तर विरोध होते हुए भी किसी न किसी रूप में संबंध बना रहता है। सब आधुनिकता का प्रतीक है। आधुनिकता का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य एक वातावरण को छोड़कर दूसरे वातावरण में नहीं लग जाय। आधुनिकता हम उसे कहेंगे जिससे लोग जान बूझ कर ऐसे समाज का निर्माण करे जो ~~किसी~~ उनके लिए मूल्यवान हो हृदय की इच्छा के अनुकूल हो तथा जो परिवर्तन हो वह भले के लिए हो।

Scanned with CamScanner

इसीलिए हम कह सकते हैं आधुनिक मनुष्य
चयन करने की क्षमता भी मनुष्य है। आधुनिक होने का
अर्थ जीवन के विकल्पों, वरीयताओं और चुनावों के
रूप में देखना है। कुछ विद्वानों के अनुसार आधु-
आधुनिकता को इकाईयों में वृद्धि ही मान लिया जाता है।
कुछ के अनुसार आधुनिकता को पश्चिमीकरण भी कहा
जाता है। कोई समाज कितना आधुनिक कहा जायेगा
इस बात पर निर्भर है कि वहाँ भौतिक साधनों और यंत्रों
का कितना प्रयोग होता है। आधुनिकता की विशेषताओं
के रूप में वैज्ञानिकता की भावना संचार साधनों में
क्रान्ति नगरीकरण, शिक्षा का प्रचार प्रसार प्रति
व्यक्ति आय में वृद्धि, राजनैतिक चेतना और सामाजिक
गतिशीलता की गणना की जा सकती है।

आधुनिकता एक सतत प्रयास है क्योंकि
इतिहास एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ रहा है। अतः उस दिशा
की खोज का सतत प्रयास करता है इस दिशा में अनेक विकल्प
उभर कर आते हैं, इन विकल्पों में से परम्परा के अनुसार
पूर्वजों के मार्ग से चुनाव करें या जानबूझकर सोच समझकर
उत्तरदायित्व के साथ विकल्पों का चुनाव करें। यदि स्वतन्त्रता
पूर्वक किसी नये मार्ग का चुनाव करते हैं तो यह आधुनिकता
होगी। चुनाव की योग्यता भी आधुनिकता का चुनाव करती ही
क्योंकि वर्तमान काल में अनेक सम्भावनाएं हैं अगर व्यक्ति इसका लाभ
नहीं उठा सकता तो इसे आधुनिक नहीं कहा जा सकता है। स्मिथ के
अनुसार मानव जीवन क्या हो रहा है क्या से क्या बनना चाहते हैं। के
और क्रमिक रूपान्तर संभव करने की प्रक्रिया का नाम आधुनिकता है अनेक
सम्भावनाओं में से किसी एक को चुनने की क्षमता ज्ञान तथा चिंतन आधुनिकता
के परिचायक हो इसलिए स्मिथ ने ठीक ही कहा है कि आधुनिकता एक
नहीं एक प्रक्रिया है अपनाने की नहीं वरन भाग लेने की वस्तु है अर्थात
में Modernity is no longer a good but a process, no longer something
to adopt but something to participate in. वास्तव में आधुनिकता
का अर्थ यह नहीं होता कि आधुनिक दुनिया में जो कुछ हो रहा है वहाँ
परम्परा का कोई स्थान नहीं रह जाता।

Scanned with CamScanner

What is Modernity

Modern शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा Modo से हुई है। Modo का शाब्दिक अर्थ प्रचलन है। इसका यह अभिप्राय है कि वर्तमान में जो कुछ प्रचलन में है वही आधुनिकता है। व्युत्पत्ति के आधार पर वर्तमान के प्रचलन को आधुनिकता कहने का यह भी तात्पर्य है कि समाज के सदस्यों ने सांस्कृतिक तथा सामाजिक परिवर्तन को जो वर्तमान में घटित हुआ है स्वीकार कर लिया है क्योंकि वे परिवर्तन लाभदायक है, उपयोगी है, वांछनीय हैं इस प्रकार आधुनिकता अच्छाई के अर्थ में स्वीकार किया गया परिवर्तन है। आधुनिक समाज की विशिष्टताओं में हम नगरीकरण, व्यापक साक्षरता, प्रतिव्यक्ति आय वृद्धि, भौगोलिक तथा सामाजिक गतिशीलता, औद्योगीकरण तथा वाणिज्यीकरण में वृद्धि संचार साधनों का विस्तार तथा सर्वोपरि समाज के नागरिकों द्वारा आर्थिक और सामाजिक प्रक्रियाओं में भाग लेने की प्रवृत्ति से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिकता की इनमें व्याप्त है।

आधुनिकता को ऐतिहासिकता के आधार पर भी परिभाषित करने का प्रयास C.W. Smith महोदय ने किया है। उन्होंने इतिहास में

और आदर्शों, मान्यताओं के स्थान पर वर्तमान मूल्यों आदर्शों का पालन करना आधुनिकता है। विवाह खान पान पहनावा की प्राचीन परम्परा के स्थान पर जो क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं उन्हें स्वीकार करना तथा उनके आधार पर सामाजिक संरचना करना आधुनिकता है। गाँव से शहर की ओर (नगरीकरण) लघु उद्योगों से कल कारखानों की ओर (औद्योगिकरण) निम्न संस्कृति से उच्च संस्कृति की ओर (संस्कृतिकरण) अतीत से भविष्य की ओर (जैवंपयार्यीकरण) धर्मांधता से धर्मनिरपेक्षता (धर्मनिरपेक्षीकरण) की ओर बढ़ना आधुनिकता है वर्तमान युग के नये मूल्यों नये आदर्शों तथा नये परिवर्तनों को स्वीकार करना तथा उनके अनुसार जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करना आधुनिकता है।

आधुनिकता वर्तमान पीढ़ी की नवीनता तथा परिवर्तन को स्वीकार करता है अतः इसमें वैज्ञानिकता प्रमुख तत्व के रूप में उभरकर आता है इसके अभाव में आधुनिकता का कोई अर्थ नहीं होगा जब तक सामाजिक संरचना और चिंतन में वैज्ञानिकता का प्रवेश नहीं होगा तब तक आधुनिकता की कल्पना व्यर्थ है वैज्ञानिकता से यहाँ अभिप्राय तार्किकता और समीक्षात्मक दृष्टिकोण है इसी के आधार पर भारत समाज में प्रगतिशीलता उत्पन्न हो सकती है इसके अभाव में समाज रूढ़िवादिता और अंधविश्वास में पड़ा रह सकता है आधुनिकता के साथ एक प्रश्न और भी जुड़ा हुआ है कि क्या आधुनिक समाजों में

कोई भी देश ऐसा नहीं है जो अपने को आधुनिक न
बनाता। भारत में प्राचीन परम्परा का पालन करने
वाला पिछड़े हुए लोगों में गिना जाता है।
प्रगतिशील नहीं कहा जाता। जो प्रगतिशील नहीं होता
यहाँ तक कि लकीर का फकीर कहा जाता है।
जनता जिस समाज में रहती है उसे अधिक से
अधिक आधुनिक बनाने की दिशा चाहती है।
राजनीतिक दृष्टि से प्रजातंत्र शासन होना
आधुनिकता का परिचायक है। आर्थिक क्षेत्र में
मशीनीकरण का होना नये नये उद्योग धंधों का
पनपना और सर्वाधिक आर्थिक सम्पन्नता
आधुनिकता का लक्ष्य है। शिक्षा के क्षेत्र में
परम्परा से चली आती हुई शिक्षण विधि तथा
पाठ्य विषय को छोड़कर तकनीकी शिक्षा प्रदान
करना जिससे ज्ञान निखर उठे जा सके आधुनिकता
का प्रतीक है। ~~शिक्षा~~ सुरक्षा के क्षेत्र में तीर कमान और
लाठी तलवार के स्थान पर नये नये अस्त्र शस्त्र
रखना, तथा स्थल के स्थान पर अंतरिक्ष को
युद्ध स्थल बनाने की कला सीखना आधुनिकता
का द्योतक है। धर्म के क्षेत्र में पुराने कर्मकांडों
यज्ञ, हवन तपस्चर्या का त्याग करके अधिक
से अधिक बौद्धिक और नैतिक बनना आधुनिकता
की ओर बढ़ता है। पारिवारिक और सामाजिक
रीति रिवाज और परम्परा से प्राचीन मूल्यों

वृहद परम्परा से बहुत कुछ ग्रहण करने पर भी अपनी विशिष्टता बनाये रखी है जिस प्रकार वृहद से लघु परम्परा ने अनेक तत्वों को ग्रहण किया है इसी प्रकार वृहद परम्परा ने भी लघु परम्परा से कुछ तत्वों को लिया है उदाहरणार्थ वृहद परम्परा के लोगों की वेश भूषा गायन नृत्य विश्वास अंधविश्वास आदि को देखने से ज्ञात होता है कि उन्होंने लघु परम्परा के लोगों से बहुत कुछ ग्रहण किया है अभिजात वर्ग के लोगों में ग्रामीण पहनावा, लोक गीत लोक नृत्य अधिक लोकप्रिय हो रहा है

आधुनिकता — समाज दर्शन की दृष्टि से परम्पराओं का जो महत्व मानव समाज में है उससे कहीं अधिक आधुनिकता की धारणा का है विज्ञान ने नये युग का प्रारम्भ किया है मानव चेतना में, विचारों में, कार्यों में नवीनता आयी है इसने राजनीति, समाजशास्त्र अर्थशास्त्र शिक्षाशास्त्र इत्यादि में परिवर्तन किया है इस प्रकार यह बिल्कुल स्पष्ट है कि विभिन्न क्षेत्रों में इन परिवर्तनों ने परम्परावादी कार्यों और प्रवृत्तियों से नवीनता उत्पन्न की है परम्परायें मानव जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है परन्तु सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से परम्परा की अवधारणा के स्थान पर आधुनिकता की अवधारणा महत्वपूर्ण सिद्ध हो रही है आज के युग की विशेषता है कि विज्ञान

... पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती रहती है

किसी समाज की परम्पराएँ चाहे वृहद हो या लघु उसकी धरोहर होती है इनसे ही सभ्यता और संस्कृति का निर्माण होता है परम्पराएँ समाज के अनुसार अच्छी और बुरी हो सकती है किन्तु सामाजिक संरचना और जन चेतना के निर्माण में इनका महत्व कम नहीं किया जा सकता है वृहद परम्पराएँ भी किसी समाज सभ्यता तथा संस्कृति के निर्माण के लिए आवश्यक होती हैं और लघु परम्पराएँ जो अशिक्षितों, ग्रामीणों तथा अचिंतनशीलों की परम्पराएँ होती है और जिनमें अंधविश्वास होता है हमारे लिए आवश्यक नहीं होती लेकिन रेडफिल्ड के अनुसार ये दोनों परम्पराएँ परस्पर आश्रित होती है इन दोनों के परस्पर आदान प्रदान से ही संस्कृति का पूर्ण विकास होता है वृहद परम्परा से लघु परम्परा और लघु परम्परा से वृहद परम्परा अनेक तत्वों को ग्रहण करती है उदाहरण के लिए लघु परम्परा के लोगों में धार्मिक अवधारणाएँ और पाप पुण्य आत्मा पुर्नजन्म स्वर्ग नरक वृहद परम्परा के ही तत्व हैं ग्रामीणों द्वारा दिखाए जाने वाले नाटक गाए जाने वाले गीत, रामलीला या रासलीला, या ग्रामीणों का सामाजिक या राजनैतिक संगठन वृहद परम्परा का भी प्रभाव प्रदर्शित करते हैं अतः यह कहा जा सकता है कि वृहद परम्परा के अनेक तत्व लघु परम्परा के अंग बन गये हैं लघु परम्परा

Scanned with CamScanner

और संस्कृति के निर्माण में परम्परा की अद्वितीय भूमिका होती है।

रार्बट रेड फिल्ड ने परम्परा के दो भेद किये हैं- वृहद तथा लघु परम्परा। इनके अनुसार किसी सभ्यता के निर्माण में दो प्रकार की परम्पराएँ क्रियाशील होती हैं एक और चिंतनशील लोगों की परम्पराएँ होती हैं और दूसरी ओर अशिक्षित लोगों की परम्पराएँ होती हैं उन्ही को क्रमशः वृहद और लघु परम्परा के नाम से पुकारा जाता है। रेडफील्ड के अनुसार वृहद परम्परा उन्नत संस्कृति, शास्त्रीय संस्कृति अथवा शिक्षित परम्परा है यह दार्शनिक, धार्मिक तथा साहित्यिक मनुष्य की परम्परा होती है यह विचार -पूर्वक संस्कार बद्ध की जाती है तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित की जाती है। मैकिम मैरियट के अनुसार भी वृहद परम्परा प्राचीन धर्म ग्रंथो में वर्णित व्यवहार विधि के अनुरूप होती है और उसका प्रसार पूरे मानव समाज में होता है। रेड फील्ड के अनुसार लघु परम्परा अचिंतनशील परन्तु बहुसंख्यक लोगों की परम्परा होती है यह परम्परा अशिक्षितों के ग्रामीण सामुदायिक जीवन में अपना विकास करती है और जीवित रहती है ऐसी परम्परा देवी देवता धार्मिक क्रिया विधान, रीति रिवाज मेले, लोक गीत, लोकनृत्य आदि में देखने को उपलब्ध होता है इनका उल्लेख लिखित रूप में धर्म ग्रंथो में वर्णित नहीं होता किन्तु मौखिक रूप से

आपसी सोम्बन्ध तथा क्रिया प्रतिक्रिया में भी परम्परा का प्रभाव देखा जा सकता है। परम्पराएँ सामाजिक नियंत्रण का भी कार्य करती है। सामाजिक जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ भी आती हैं जिनमें हमें यह नहीं सोचना पड़ता कि क्या करना चाहिए क्योंकि परम्परा के अनुसार कार्य सुगमता से किया जा सकता है। समस्याओं के समाधान के लिए परम्पराएँ कारगर होती है।

परम्पराओं का महत्व व्यक्ति तथा समाज के व्यवहारों के नियंत्रण तथा मार्गदर्शन में भी है। व्यक्ति परम्परा के विरुद्ध कोई कार्य आसानी से नहीं कर सकता क्योंकि परम्पराएँ नियंत्रण का कार्य करती हैं। परम्परा का महत्व व्यक्ति और समाज के जीवन में एकरूपता उत्पन्न करने में है। इसका फल यह होता है कि सभी व्यक्ति समान रूप से एक ही परम्परा के अनुगामी होते हैं। किसी समुदाय के व्यक्ति की पहचान उनकी परम्परा के आधार पर हो सकती है। सामाजिक मूल्यों में दृढ़ता उत्पन्न करने में परम्परा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह बात ठीक है कि नये मूल्यों की स्थापना में परम्परा कभी कभी बाधक सिद्ध होती हैं किन्तु यदि एक बार मूल्य की स्थापना हो जाती है तो परम्परा का रूप ले लेती है और परिणामस्वरूप उसमें दृढ़ता आ जाती है। किसी देश की सभ्यता तथा संस्कृति को जानने के लिए उसकी परम्परा को जानना आवश्यक हो जाता है क्योंकि सभ्यता

अंग्रेजी भाषा Tradition की उत्पत्ति Tradere से हुई है जिसका अर्थ होता है एक दूसरे को देना एक दूसरे को सौंपना या हस्तांतरित करना। अतः यह शाब्दिक अर्थ से भी परम्परा का परम्परा का वही अर्थ निकलता है जो परम्परा का सामाजिक विरासत से अभौतिक अर्थ के रूप में लिया गया है जिसको समाज की एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को सौंपती जाती है परम्परा सामाजिक विरासत का अभौतिक अंग है परम्परा से सामाजिक व्यवहारों प्रथाओं, आदतों का संरक्षण होता है तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को इनका हस्तांतरण होता है परम्परा में अतीत के मानवीय अनुभव सन्निहित रहते हैं जो समाज के लिए उपयोगी होते हैं परम्पराएँ वैयक्तिक तथा सामाजिक संरचना का कार्य करती हैं परम्पराएँ स्थिर होती हैं फिर भी इनमें परिवर्तन होता रहता है परन्तु परिवर्तन की गति मंद होती है परम्पराएँ सामाजिक मूल्यों का निर्धारण करती है देश की सांस्कृतिक संरचना का ज्ञान परम्परा के आधार पर होता है परम्पराओं का सामाजिक जीवन पर अत्यधिक प्रभाव देखा जा सकता है किसी समाज की सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक ढाँचे में परम्पराओं का अत्यधिक महत्व देखा जा सकता है सामाजिक संस्थाओं के जो भी कार्य निर्धारण होता है वह परम्पराओं द्वारा ही होता है यहाँ तक कि समाज में रहने वाले व्यक्तियों के व्यवहार तथा उनके

क्या ~~आधुनिकी~~ आधुनिकीकरण पश्चिमीकरण है

आधुनिकता के विषय में कुछ पाश्चात्य तथा भारतीय विचारकों ने इस धारणा को आधुनिकता का जो आदर्श है वह स्वीकार का है। वैन डीक्स, आइजन स्टैण्ड, लरनर, तथा डॉ श्रीनिवास ने आधुनिकीकरण तथा पश्चिमीकरण को समानार्थी रूप में लिया है। इसके अनुसार आधुनिकता का अर्थ पश्चिमी देश में होने वाले सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक परिवर्तन की ओर अग्रसर होने में निहित है। इसलिए किसी पश्चिमी देश के प्रत्यक्ष और परोक्ष सम्पर्क के कारण किसी गैर पश्चिमी देश में होने वाले परिवर्तनों के लिए प्रचलित शब्द है आधुनिकीकरण। लरनर महोदय ने पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण दोनों की उपयुक्तता पर विचार करने के अनन्तर आधुनिकीकरण को स्वीकार किया है। आधुनिकीकरण को पश्चिमीकरण कहने के कारण पर यदि हम चिन्तन करें तो यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है पश्चिमी देशों का उपनिवेश एशिया, अफ्रिका और आस्ट्रेलिया के देश रहे हैं तथा इन देशों ने पश्चिमी देशों के उपनिवेश रहने के कारण बहुत कुछ ग्रहण किया है अनेक सांस्कृतिक तत्वों को अपनाया गया है। कृषि कल्याणकारी कार्यों से नये-नये परिवर्तन उभर कर आये। पशुपालन, सिंचाई, विद्युत, प्रारम्भिक शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सरकारी विभाग में आधुनिकता देखी जा सकती है। क्या परम्परा बिल्कुल समाप्त हो गयी या परम्पराओं को रहते हुए आधुनिकता आ रही है दूसरे शब्दों में परम्परा और आधुनिकता में कितना विरोध यह विचारणीय मुद्दा है।

परम्परा तथा आधुनिकता के ~~सम्बन्ध~~ सन्दर्भ में एक सामान्य धारणा पायी जाती है दोनों में विरोध है अनेक विचारकों ने परम्परा और आधुनिकता को विरोधी अर्थ में ही प्रयोग किया है। प्रसिद्ध विचारक कॉनडोरसे के अनुसार परम्परा को कोई महत्व नहीं दिया गया है तथा उन्होंने ने भविष्य को महत्व दिया। भविष्य को इसलिए महत्व दिया कि विकास से मानव जाति की प्रगति होती होती है। कार्ल मार्क्स ने भी द्वन्द्वात्मक पद्धति के आधार पर प्राचीन मूल्यों की भर्त्सना की है तथा क्रान्ति के द्वारा नवीनता तथा परिवर्तन को स्वागत किया है साथ परम्परा को नष्ट किया जाए। परम्परा तथा आधुनिकता के विरोध के कारणों

Scanned with CamScanner

कारणों में मुख्य कारण यह है कि दोनों अवधारणाओं की गलत व्याख्या की गई है आधुनिकता के पोषण करने वाले परम्परा के गलत व्याख्या करने वाले यह मानते हैं परम्परा में संकीर्णता और प्राचीनता भी है। इसके विपरीत आधुनिकता संकीर्णता के स्थान पर सार्वभौमिक दृष्टिकोण देती है केवल भावना तथा अबौद्धिकता के स्थान पर बौद्धिकता की उपयोगिता तथा विज्ञान को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है आधुनिकता में व्यक्ति नहीं समूह मुख्य होता है स्वेच्छावाद को महत्व मिलता है समूह साधानता जन्म से नहीं इच्छा पर आधारित है। भाग्यवादिता के स्थान पर कर्म को महत्व दिया जाता है। राजनीतिक धारणा में परिवर्तन होता है। सरकार सामान्य व्यक्ति के पहुँच से परे है। यह धारणा समाप्त हो जाती है। सरकार तथा जनता एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी होते हैं। जनता की सहभागिता आवश्यक होता है। परम्परा और आधुनिकता के विषय में ऐसी विपरीत धारणाएं उन लोगों की हो सकती हैं जिन्होंने आधुनिकीकरण को पश्चिमीकरण माना है। साथ ही गैर पश्चिमी करण और पश्चिमी समाज की तुलना करने वाले ने परम्परा को गलत समझने का प्रयास किया है।

निष्कर्षतः, यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक आधुनिक समाज में परम्परागत आधुनिक तत्व विद्यमान रहते हैं। इसी प्रकार परम्परागत समाजों में भी आधुनिकता के तत्व ~~प्रदुव~~ प्रवाहमान रहते हैं अतः आधुनिकता और परम्परा एक दूसरे के विरोधी नहीं सहयोगी हैं पश्चिम में जो आधुनिकता की प्रक्रिया रही तथा उन देशों को जिन-जिन अवस्थाओं से गुजरना पड़ा और आधुनिकता की आवश्यकता पड़ी, यह आवश्यक नहीं है कि नवीन राज्यों को भी वही प्रक्रिया दुहराना पड़े। समानताएँ हो सकती हैं परन्तु उन्हें पूर्णतया ~~निकाल मान~~ नकल मानना दोष पूर्ण है। पश्चिमी देशों में जब आधुनिकीकरण की प्रक्रिया जब शुरू हुई तो उनके सामने कोई आदर्श ~~है यथा उनको पहले~~ से उपलब्ध नहीं था परन्तु आज समग्र नवोदित राष्ट्रों के सामने आदर्श हैं तथा उनको ~~बौद्धिक~~ वैज्ञानिकता का ज्ञान भी है वे किसी भी विधि तथा प्रक्रिया को अपना सकते हैं और आधुनिकता में सहयोगी हो सकते हैं।

Scanned with CamScanner